PPU

Date
28.10.2020

Dr Indira Jha
Head of Maithili Department
R.K.D. College, Patna

B.A. Part II M.B. 50 marks

Q. संधिक भेदक परिभाषा उदाहरण सहित

दु शब्दक मेल संधि होइत अछि। संधिक पाँच भेद होइत अछि—

(1) दीर्घ स्वर संधि — अ, इ, उ तथा ऋ के पश्चात ह्रस्व वा दीर्घ समान स्वर रहय तँ दीर्घ स्वर संधि होइत अछि।
उदाहरण — अ + अ = आ, नव + आगत = नवागत

(2) गुण संधि — अ आ केर पश्चात इ, ई, उ, ऊ तथा ऋ रहै तँ ए, ओ, अर भ जाइत अछि — देव + इन्द्र = देवेन्द्र, देव + ईश = देवेश

(3) वृद्धि संधि — अ अथवा आ केर पश्चात ए, ऐ, ओ तथा औ रहय तँ ऐ औ भ जाइत अछि। एक + एक = एकैक
देव + ऐश्वर्य = देवैश्वर्य, महा + औषधि = महौषधि

(4) यण संधि — इ, ई, उ, ऊ आओर ऋ के स्थानमे य, व, र केर प्रयोग होइत अछि—
यदि + अपि = यद्यपि, प्रति + एक = प्रत्येक

(5) अयादि संधि — ए, ऐ, ओ, औ केर पश्चात कोनहु भिन्न स्वर रहला तँ अयादि संधि होइत अछि—
ने + अयन = नयन, पो + अक = पावक

Q. निम्न शब्दक संधि विच्छेद करू:
विद्यालय, कवीन्द्र, परमात्मा, विद्यार्थी

विद्या + आलय = विद्यालय, कवि + इन्द्र = कवीन्द्र
परम + आत्मा = परमात्मा, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

Date 28.10.2020 P.P.V.

Dr. Indira Jha
Head of Maithili Department
R.K.D. College Patna-20
B.A. Part III Maithili Hons
Paper - VII

Q. मैथिलीक प्रसिद्ध खण्डकाव्यक विवेचन करब। खण्डकाव्य महाकाव्यक समग्रता ओ महत्ताक तुलनामे ओकर एक अंश वा खण्ड सदृश होइत अछि। मैथिलीक प्रसिद्ध खण्डकाव्य निम्न अछि—

(1) कृषक - मथुरानन्द चौधरी 'माथुर'क प्रसिद्ध खण्डकाव्य थिक कृषक जाहिमे कृषक जीवनक दयनीय स्थितिक वर्णन अछि।

(2) पतन - उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क पौराणिक खण्डकाव्य थिक 'पतन'। प्रतापी राजा नहुष तप बलसँ इन्द्रासन प्राप्त करैत छथि मुदा इन्द्राणीकेँ प्राप्त करबाक प्रयासमे हुनक स्वर्गसँ पतन होइत छनि।

(3) संन्यासी - उपेन्द्र नाथ झा 'व्यास'क कल्पना प्रसूत खंडकाव्य अछि संन्यासी।

(4) लखिमा रानी - केदार नाथ लाभक पाँच सर्गमे निबद्ध अछि लखिमा रानी खंडकाव्य जाहिमे म. शिव सिंहक विदुषी पत्नी लखिमाक चरित्रांकन अछि।

(5) भारती - केदार नाथ लाभक भारती खंड काव्यमे ज्ञान ओ कर्मक अद्भुत मिश्रण अछि।

(6) शरशय्या - बुद्धिधारी सिंह 'रमाकर'क रचित 'शरशय्या' खण्डकाव्य महाभारतक युद्धमे भीष्मक शरशय्याक वर्णन अछि।

(7) एकलव्य - प्रो. अमरेन्द्र मिश्रक एकलव्य खण्डकाव्यमे एकलव्यक जीवन चरित अछि।

(8) सीता - रवीन्द्र नाथ ठाकुरक सीताक जीवन चरित पर आधारित खंड काव्य अछि।

(9) पंचकन्या - रवीन्द्र नाथ ठाकुरक द्रौपदी, तारा, कुंती, मंदोदरी, पंचकन्याक चरित्र अछि।

Date
29.10.2020 P.P.U.

Dr. Indira Jha
Head of Maithili Depart(ment)
R.K.D. College,
Patna-20

B.A Part I Subsidiary
Maithili

गीत संख्या - 1. (विद्यापति गीत रचनावली)

Q. सप्रसंग व्याख्या करू:

अन्धार कुशोभित चकन कुम्हलाए
मयूरी फुलल पुष्प अरविन्द
रहि रहि कुलकित नयन माधरा
कुमल करल देल पकुमल नमरा॥
बिमोहित न देखिए निरमल रजनी।
निकु नुपुर ससों चलि आइलि गजगामिनी॥

प्रस्तुत अवतरण डा. वीणा ठाकुर द्वारा सम्पादित विद्यापति गीत रचनावली सँ लेल गेल अछि। प्रस्तुत विद्यापतिक पदमे शयनक सौन्दर्यक वर्णन अछि। कवि अपन विचार व्यक्त करैत छथि जे नायिका शयनक हेतु उपर जाइत छथि जे एहन उपर चढ़ि कुशोभित भ' रहल छथि। एहन लगैत अछि जेना मयूरी पुष्पसँ कमलक पुष्प भ' रहल हो। (उत्प्रेक्षा) एहन ग्रिन्सल पर कोई आबि रहल लगैत अछि जेना विरह काल पर अमर बैसल हो।

Date
29.10.2020

P.P.V.

Dr. Indira Jha
Head of Maithili Department
R.K.D. College, Patna-20

B.Sc. Part I M.B. 50 Marks

Maithili

Q. प्रो. हरिमोहन झाक कथा द्वयो शास्त्राचार्यक कथ्य पर संक्षेपमे (लिखू)।

Ans. मैथिली गद्यक विकासमे प्रो. हरिमोहन झाक योगदान अविस्मरणीय अछि। हास्य व्यंग्यक माध्यम सँ प्रो. झा सामाजिक समस्याक अभिव्यक्ति कयलनि अछि। प्रो. रमानाथ मिश्रक कथन अक्षरशः सत्य अछि जे समाजक गहिँर घाउ पर प्रो. हरिमोहन बाबू देशज हँसैत हँसैत प्रहार कयलनि ओतए जोशा यथार्थ मे आइयो अछि। द्वयो शास्त्राचार्य कथामे तत्कालीन मिथिलाक पाखण्ड, अंधविश्वास पर व्यंग्य करैत एकटा शास्त्री पं. चूड़ामणि शास्त्री ज्योतिषशास्त्रक कट्टर अनुयायी छलाह। ओ सब कार्य स्मृतिक अनुसार करैत छलाह। एकादशी व्रत रहैत छलाह जे भारत के सब स्थान भोजन नहि करैत छलाह। तथ्य अरवा भोजन करैत छलाह। अविलम्बक व्यवहार करैत छलाह। कहियो फलाहार त कहियो पंचगव्य भोजन करैत छलाह। एक दिन गोपाचार नामक लोक हिनका फेरमे पड़ि गेलाह। शास्त्री जी कहलनि जे तौं करह कार्य तँ कतेक नाश करय —

Date 30.10.2020 P.P.U.

Dr. Indira Jha
Head of Maithili Department
R.K.D. College. Patna-20
B.A. Part III Maithili Hons
Paper - VII

Q. मनबोधक कृष्णजन्मक महत्व प्रतिपादित करू:

Ans. मनबोधक समय काल अठारहम शताब्दी थिक। हुनक कृष्णजन्म पौराणिक कथाकाव्य थिक। ओ मनबोध मध्यकालीन शृंगारिक मुक्तक काव्य अथवा राधाकृष्णक लीलागानक परम्पराकेँ तोड़लनि। ई गीत धारा एकहि शताब्दीमे प्रवाहित होइत रहल से साहित्यिक गतिविधिकेँ रोकि रहल छल। एहि कथाकाव्यमे वात्सल्य रस अछि, कृष्णक बाल लीला, हुनक पराक्रमक वर्णन अछि। मनबोध प्रथम महाकाव्य लिखलनि। एहि ग्रंथक कथावस्तु श्रीमद्भागवत ओ हरिवंश पुराणसँ लेल गेल अछि। एकर प्रारम्भमे मंगलाचरण अछि जाहिमे भगवती वन्दना अछि

प्रणमो गिरिवर कुँवरि चरण
बाहि बल कवि मन तैँ कुशल वरण

एहिमे अठारह गोट सर्ग अछि जाहिमे आठ ओ नवम छेदि एहन लगैत अछि जेना एकरा कुल चारि मनबोधक लिखल अछि तथा एगारहसँ अठारह चारि कोनो आन कवि द्वारा जोड़ल गेल अछि। एकर प्रमाण एहि ग्रंथ एक ठाम चौपाइमे लिखल अछि। एकर मुख्य रस वात्सल्य तथा आन रस एकर अंगी रूपमे अछि।

Date
31.10.2020

P.P.U.

Dr. Indira Jha
Head of Maithili Department
R.K.D. College, Patna-20
B.A. Part I Maithili Hons
Paper - I

Q. सुभाषचन्द्र यादव रचित 'घरदेहरि' कथासंग्रहमे संकलित 'कोना' कथाक समीक्षा करू।

Ans: प्रस्तुत कथा 'कोना' सुभाष चन्द्र यादव रचित प्रसिद्ध कथा छिक (लेखक यादव जीक कथा समाजक यथार्थ प्रतिबिम्बित करैत अछि। यादव गद्यमे व्यंग्य पात्र भाषा सरल रहैत। कतहु परस्पर टकरावक स्थान नहि। सुशीला नायिका अपन [illegible] देखि रामबाबूक इच्छा नहि भेलनि जे [illegible] चाली सुशीलाक [illegible] रहैत छलि। [illegible] कोना सुनका सेहो रंगा क' बैसि गेल। चाहे अन्यमा। पसरल रहैक। सुरक्षित नेना सेवा नहि आ सकल। रामपुर वालीक आग्रह रहैक जे नेना ओकरा आंगनसँ गाड़ि। ओ औतए गेल। रामपुर वाली अपन आंगनमे बैसल नेनाक देखा कहलकै जे सुशीलाक पहिल साउनमे साड़ी [illegible] नहि मंगावा लेलियै। सुशीला नायक अपन [illegible] कहलक। नहि बदलब। सुशीला नायक मृत्यु भ' गेलनि, मुदा केओ कफनक कपड़ा देब लेल तैयार नहि — o

Date — 31.10.2020 — P.P.U.

Dr. Indira Jha
Head of Maithili Department
R.K.D. College, Patna-20
B.A. part III Hons Maithili
Paper VII

Q. मैथिली कथाक विकासक संक्षिप्त परिचय दिअ।

Ans. कथा गद्य साहित्यक एक प्रमुख विधा थिक। पत्र-पत्रिकाक विकासक संग ई विधा समृद्ध भेल। [illegible] [illegible] अध्याय, [illegible] [illegible] [illegible], कथा [illegible] [illegible] भेल, ई [illegible] [illegible]। आदि कथाक आधुनिक मैथिली कथाक बीज वपन भेल। मैथिलीक प्रारम्भिक कथाक रूप [illegible] रहल। [illegible] [illegible] प्राचीन परम्पराक कथा, [illegible] — उदयन कथा ओ वररुचि कथा। [illegible] [illegible] [illegible] कर्णामृत, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ओ [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] कथा संग्रह, [illegible] [illegible] पाग ओ [illegible] [illegible]: [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कथा संग्रह [illegible] आदि।

— o —

Date 31.10.2020 P.P.V.

Dr. Indira Jha
Head of Maithili Department
R.K.D. College. Patna-20

B.A. Part II Maithili Hons
Paper IV

Q. आलोचनाक परिभाषा आ आलोचना शब्दक व्याख्या करू।

Ans: समीक्षात्मक साहित्यक पश्चात आधुनिक कालमे आलोचनाक प्रयोग भेल। प्रारम्भमे एकर अभिव्यक्ति परिस्थिति, परिवेश आ आकृति केर पर्यायक परिणाम स्वरूप भेल। साहित्य एकटा व्यापक शब्द अछि। एकर अन्तर्गत विज्ञानशास्त्र, अर्थशास्त्र, राजनीति शास्त्र, मनोविज्ञान, दर्शन शास्त्र सन विषय आबि जाइत अछि। अतः साहित्य व्यापक रूप लेने अछि। अतः साहित्य अपनामे अपूर्व निहित बनिके रहैत अछि। आलोचना ओ समीक्षा पर्यायवाची शब्द थिक। कोनो कृतिक सम्यक व्याख्या आओर मूल्यांकन करब आलोचना थिक। समीक्षा आ आलोचना प्रक्रिया थिक जाहि ठाम कोनो दर्शनीय वस्तुक देखबाक इच्छा करय। कोनो गहन चिन्तन समालोचना अछि। ध्यान वा साहित्य तत्वक अन्वेषण करबाक प्रयत्न अछि जे प्रत्येक मानवक अन्तर्गत निहित रहैत अछि। मानव प्रेम बढ़ैत अछि जे समीक्षा कतेक गुणा अधिक अवश्य कहैत अछि।